चुनावी नतीजों के निहितार्थ

संजय कुमार

सीएसडीएस के फेलो हैं संजय कुमार

हाल में संपत्र उपचुनावों में कांग्रेस भले ही बुरी तरह पराजित हुई हो, लेकिन इसे यूपीए सरकार के खिलाफ जनादेश के रूप में नहीं देखा जा सकता. ये नतीजे उम्मीदवारों की स्थानीय लोकप्रियता के अलावा उस राहलय के सत्ताधारी दल के प्रति जनादेश को प्रदर्शित करते हैं.

हाल में संपत्र उपचुनावों में कांग्रेस भले ही बुरी तरह पराजित हुई हो, लेकिन इसे यूपीए सरकार के खिलाफ जनादेश के रूप में नहीं देखा जा सकता. ये नतीजे उम्मीदवारों की स्थानीय लोकप्रियता के अलावा उस राहलय के सत्ताधारी दल के प्रति जनादेश को प्रदर्शित करते हैं.

यह एक सच्चाई हो सकती है कि कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गंठबंधन की केंद्र सरकार के प्रति देश की जनता में असंतोष है, लेकिन हाल में संपत्र विभित्र उपचुनावों में कांग्रेस की बुरी तरह पराजय को यूपीए सरकार की नीतियों के खिलाफ जनादेश के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए. ये नतीजे विभित्र राहलयों के अपने-अपने निर्वाचन षोत्रों में किस्मत आजमा रहे उम्मीदवारों की स्थानीय स्तर पर लोकप्रियता के अलावा उस राहलय के सत्ताधारी दल के प्रति जनादेश को प्रदर्शित करते हैं. हालांकि उपचुनावों के इन नतीजों से बिहार, तमिलनाडु और पुदुचेरी की राहलय सरकारों की सेहत पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा, फिर भी इन राहलयों की सत्ताधारी पार्टियां अपनी उन सीटों को बरकरार रखने में सफल रही हैं, जिन पर पहले उनका कब्जा था. उधर, महाराष्ट में सत्ताधारी कांग्रेस-एनसीपी गंठबंधन और आंध्रप्रदेश में सत्ताधारी कांग्रेस पाटीर्त् को सीटों का कोई नुकसान नहीं हुआ है, क्योंकि उपचुनाव से पहले भी यहां की सीटों पर गैर कांग्रेसी दलों का ही कब्जा था. ठीक यही सच्चाई हरियाणा के हिसार लोकसभा उपचुनाव के नतीजों में भी देखी जा सकती है, क्योंकि यहां भी पहले हरियाणा जनहित कांग्रेस के उम्मीदवार भजनलाल जीते थे. ऐसे में क्या वास्तव में इन चुनावी नतीजों को यूपीए सरकार के लिए झटका कहा जा सकता है? हिसार लोकसभा षोत्र में उपचुनाव राहलय के पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल के देहांत के कारण कराना पड़ा. लेकिन इस उपचुनाव पर पूरे देश की निगाहें टिक गय थीं, क्योंकि गांधीवादी समाजसेवी अत्रा हजारे की टीम ने यहां कांग्रेस के खिलाफ प्रचार

अभियान चलाने का फैसला लिया. आखिर कांग्रेस प्रत्याशी जय प्रकाश बुरी तरह पराजित हो गये. लेकिन इस पराजय से लोकसभा में कांग्रेस की संख्या पर कोई असर नहीं पड़ा. 2009 के लोकसभा चुनाव में यहां से भजनलाल जीते थे और हरियाणा की यह एकमात्र ऐसी लोकसभा सीट थी, जहां कांग्रेस को पराजय का सामना करना पड़ा था. यहां कांग्रेस के खिलाफ प्रचार कर रही टीम अत्रा कांग्रेस की पराजय का पूरा श्रेय खुद लेने का प्रयास कर रही है. हो सकता है कि टीम अत्रा के आह्वान के कारण कांग्रेस को कुछ हजार वोट कम मिले हों, लेकिन हरियाणा जनहित कांग्रेस के उम्मीदवार कुलदीप बिश्नोई भाजपा का समर्थन मिलने के कारण शुरू से ही यहां के जीत के सबसे सशक्त दावेदार माने जा रहे थे. हरियाणा के कद्दावर नेता भजनलाल की सीट होने के कारण उनके पुत्र के प्रति यहां के मतदादाओं की सहानुभूति भी थी. ऐसे में यदि कांग्रेस यहां जीतने में सफल हो जाती, तो यह उसकी एक अप्रत्याशित जीत कहलाती.

हालिया उपचुनावों में बिहार में दरौंदा विधानसभा षोत्र में जद (यू) प्रत्याशी कविता कुमारी विजयी हुईं. उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी राजद के परमेश्वर सिंह को करीब 20 हजार वोटों से हराया. यहां तीसरे स्थान पर रही कांग्रेस का प्रदर्शन अत्यंत खराब रहा. लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि 2010 के विधानसभा चुनाव में भी इस सीट पर जद (यू) प्रत्याशी जगमातो देवी ने बड़े अंतर से जीत दर्ज की थी. ऐसे में इस विधानसभा षोत्र के नतीजे को जद (यू) की जीत बरकरार रहने के रूप में ही देखा जायेगा. इसे केंद्र की यूपीए सरकार की नीतियों के खिलाफ जनादेश या बिहार में कांग्रेस की लोकप्रियता घटने का संकेत नहीं कहा जा सकता.

तमिलनाडु में तिरुचि पश्चिम विधानसभा षोत्र में हुए उपचुनाव में राहलय की सत्ताधारी पाटीर्त् एआइएडीएमके की जीत हुई है. यहां एआइएडीएमके प्रत्याशी की जीत पहले से ही लगभग तय मानी जा रही थी, लेकिन यह भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने डीएमके के कद्दावर प्रत्याशी को 14,684 के बड़े अंतर से हराया है. इस जीत से राहलय विधानसभा में एआइएडीएमके की संख्या पर कोई असर नहीं पड़ेगा. कांग्रेस का तो यहां कोई दावं ही नहीं था.

कांग्रेस को पुद्दुचेरी की इंदिरा नगर सीट पर भी हार का सामना करना पड़ा. यहां एनआर कांग्रेस के प्रत्याशी को 8 हजार से ह्लयादा मतों के अंतर से जीत हासिल हुई. लेकिन ध्यान देने योग्य यह है कि कुछ माह पहले हुए विधानसभा चुनाव में भी यहां एनआर कांग्रेस के प्रत्याशी बड़े अंतर से विजयी हुए थे. इस नतीजे से इतना तो कहा जा सकता है कि कांग्रेस कुछमाह पहले हुए चुनाव के अपने प्रदर्शन में सुधार लाने में सफल नहीं हो सकी, लेकिन इसे भी केंद्र सरकार के खिलाफ असंतोष की परिणति कहना सही नहीं होगा. आंध्र प्रदेश के बांसवाड़ा विधानसभा षोत्र के उपचुनाव में तेलंगाना राष्टीय समिति के उम्मीदवार ने कांग्रेस प्रत्याशी को 50 हजार से

ह्लयादा मतों के अंतर से पराजित किया. यह कांग्रेस की एक बड़ी पराजय है, लेकिन इस नतीजे से राह्लय विधानसभा में उसकी सीटों की संख्या नहीं बदलेगी, क्योंकि यह सीट पहले टीडीपी के खाते में थी, जिसके प्रत्याशी ने 2009 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी को करीब 26 हजार मतों के अंतर से हराया था. महाराष्ट्र के खडवासला विधानसभा षोत्र में हुए उपचुनाव में कांटे के मुकाबले में भाजपा प्रत्याशी ने एनसीपी के उम्मीदवार को करीब 3 हजार मतों से पराजित कर दिया. एनसीपी के प्रभाव षोत्र में उसकी पराजय को कुछ विश्लेषक केंद्र की यूपीए सरकार के प्रदर्शन से जोड़ कर देखरहे हैं. लेकिन यहां ध्यान रखना होगा कि एनसीपी का प्रभाव षोत्र होने के बावजूद 2009 के विधानसभा चुनाव में इस सीट पर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के प्रत्याशी की जीत हुई थी. इसलिए इस नतीजे को भी केंद्र की यूपीए सरकार की नीतियों के खिलाफलोगों के असंतोष की परिणति मानने का कोई ठोस आधार नहीं बनता है.